मातृभाषा और स्कूल की भाषा अलग-अलग होने का प्रभाव बच्चे के सीखने और ठहराव पर क्या पड़ता है, इसे आदिवासी बच्चों की शिक्षा की समस्याओं के संदर्भ में आसानी से समझा जा सकता है। सहज वातावरण और संदर्भ, दो ऐसे कारक हैं जो बच्चों के सीखने को प्रोत्साहित करते हैं। केन्द्रीकृत व्यवस्था में तैयार पाठ्यपुस्तकों में बच्चों के सामाजिक संदर्भ की अनदेखी होती है और प्रचलित शाला वातावरण बच्चों को सहज माहौल नहीं मिलने देता। संदर्भशाला कार्यक्रम का यह अनुभव सहज वातावरण और बच्चों के संदर्भ से जोड़कर भाषा शिक्षण के प्रयास को सामने रखता है।

आदिवासी बच्चे और भाषा शिक्षण

दिलिप चुघ

शिक्षा जगत में आदिवासी बच्चों की शिक्षा हमेशा से ही चुनौतीपूर्ण मुद्दा रही है। आदिवासी बच्चों के स्कूल से न जुड़ पाने के कारणों में इन समुदायों में पढ़ने-लिखने की संस्कृति का अभाव और गरीबी को प्रमुख से गिनाया जाता है। ये कारण स्वयं शिक्षा व्यवस्था में मौजूद उन कारणों की अनदेखी करते हैं जो आदिवासी समुदाय के बच्चों के शिक्षा से अपवर्जित होने के वास्तविक कारण हैं। बहुत से अध्ययन और हमारा अनुभव बताता है कि आदिवासी बच्चों के अपवर्जन के कारण स्वयं स्कूली व्यवस्था में मौजूद हैं। हमें लगता है कि इन बच्चों के विद्यालय से न जुड़ पाने की एक मूल वजह विद्यालय की भाषा व पाठ्यपुस्तकें हैं क्योंकि एक आदिवासी बच्चा विद्यालय की तथाकथित मानक भाषा और उनके परिवेश से जुदा पाठ्यपुस्तकों से कभी अपना नाता जोड़ ही नहीं पाता और धीरे-धीरे स्कूली शिक्षा से अलगाव महसूस करने लगता है। बहुत से शोध बताते हैं कि बच्चों के अन्य विषयों में पिछड़ने का प्रमुख कारण भाषायी दक्षताएं हैं। जो बच्चे कक्षा पांच तक पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाते वे अन्य विषय क्षेत्रों में भी पिछड़ जाते हैं। इसके अलावा आदिवासी समुदाय के प्रति शिक्षकों का नकारात्मक नजरिया रही-सही कसर पूरी कर देता है।

आदिवासी बच्चों की शिक्षा से जुड़े ऐसे ही मुद्दों का गहराई से अध्ययन करने एवं समाधान की दिशा में कुछ ठोस प्रयास करने के लिए राजस्थान के बारां जिले में शाहबाद व किशनगंज ब्लॉक के आदिवासी क्षेत्र में संदर्भशाला परियोजना[1] काम कर रही है। इस परियोजना का *मुख्य उद्देश्य आदिवासी बच्चों की बेहतर शिक्षा हेतु शिक्षण पैकेज तैयार करना है।*

इसके लिए आदिवासी क्षेत्र के 44 राजकीय विद्यालयों का चयन किया गया। इसमें 4 राजकीय विद्यालयों को संदर्भशाला के रूप में विकसित किया जा रहा है। संदर्भशाला में क्रियात्मक शोध (एक्शन रिसर्च) के जरिए आदिवासी बच्चों की शिक्षा से जुड़ी समस्याओं, खासतौर से भाषा शिक्षण संबंधी समस्याओं का गहनता से अध्ययन करने का एक प्रयास है। साथ ही इन संदर्भशालाओं से प्राप्त अनुभव एवं दृष्टि के आधार पर शेष राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में राजकीय शिक्षकों के साथ मिलकर यह देखने का प्रयास किया जा रहा है कि क्या यह पैकज आदिवासी बच्चों के लिए उपयुक्त व प्रभावी होगा ?

लेखक परिचय : साहित्य में एम.ए., करीब 7 वर्षों से स्वयंसेवी संगठनों में कार्यरत। संप्रति : संदर्भ शाला कार्यक्रम, बारां में सहायक समन्वयक।

सम्पर्क : 30, एन.ई.बी., सुभाष नगर, अलवर-301001 राजस्थान

1. राजस्थान के बारां जिले में शाहबाद एवं किशनगंज ब्लॉक में यह कार्यक्रम दिगन्तर द्वारा संचालित है।

परियोजना में भाषा शिक्षण के मुद्दे :

संदर्भशाला परियोजना में भाषा शिक्षण से संबंधित मुख्य रूप से निम्न मुद्दों पर काम करना तय किया है-

- आरम्भिक स्तर पर आदिवासी बच्चों की शिक्षा के विभिन्न स्तरों व चरणों में उनके साथ संवाद के लिए कौनसी भाषा सर्वाधिक उपयुक्त होगी ?
- भाषा शिक्षण में आदिवासी इतिहास, संस्कृति, लोक साहित्य को कैसे काम में लिया जाए ?

संदर्भशाला परियोजना में यह मान्यता लेकर चला गया कि बेहतर भाषा शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों की स्थानीय भाषा को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। बच्चों के साथ अधिकाधिक अन्तःक्रिया और बातचीत उनकी स्थानीय भाषा में होनी चाहिए। परियोजना के पहले सत्र (2007-08) में भाषा शिक्षण में लिपि सिखाने हेतु सरकारी पाठ्यपुस्तकों के अनुसार शब्द पद्धति पर काम करवाया गया। क्योंकि यह परियोजना टीम के ज्यादातर सदस्यों की सीमा थी कि उनको, खासतौर पर शिक्षकों को, स्थानीय भाषा नहीं आती थी। इसलिए पहली बार विद्यालय आ रहे आदिवासी बच्चों से संवाद बना पाना ज्यादा मुश्किल रहा और दूसरी समस्या आनन्द पोथी के कारण रही। समस्याओं को रेखांकित किया जाए तो निम्न बातें कही जा सकती हैं :-

- शिक्षक की संवाद की भाषा हिन्दी होने से शिक्षक व बच्चे एक-दूसरे की बातों को ठीक से नहीं समझ पाए। जैसेः- निर्देशों को न समझ पाना, बच्चों द्वारा जवाब देने में झिझक महसूस करना व बच्चों का चर्चा में भाग न ले पाना।
- हिन्दी भाषा में कहानियां सुनाने पर बच्चे बहुत कम रुचि लेते थे।
- पढ़ने के लिए आनंद पोथी के आधार पर तथा शिक्षकों के द्वारा बनाकर दी गई अन्य सामग्री को पढ़कर समझने में भी बच्चों को समस्या आई।
- इस तरीके से काम करते हुए भाषा सीखने-सिखाने के तौर तरीकों में लोक साहित्य को कैसे व कहां सम्मिलित किया जाए इसके लिए पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाया।
- आनन्द पोथी में काम में लिए गए कुछ शब्दों के चित्रों व नामों से बच्चे अपरिचित थे। जैसेः- जहाज, रथ, वक, अनार, दरजी आदि।

इन समस्याओं को देखते हुए पिछले सत्र (2007-08) से ही परियोजना स्तर पर सभी साथियों ने विचार-विमर्श के बाद यह तय किया कि भाषा शिक्षण हेतु स्थानीय समुदाय से एकत्रित की गई कहानियों को छांटा जाए और उन्हें देवनागरी लिपि में चार्ट पर मोटे अक्षरों में लिखा जाए और फिर बच्चों को इसके बाद कहानी के वाक्यों व शब्दों पर काम करवाते हुए शब्दों (वर्ण सिखाने हेतु) की पहचान करवाई जाए। हम जानते हैं कि बच्चे अपनी भाषा का इस्तेमाल रोजमर्रा के जीवन में पूरी क्षमता से करते हैं। अतः परियोजना टीम का यह विचार बना कि क्यों न लिपि सिखाने के लिए भी इनकी मातृभाषा का ही उपयोग किया जाए और वह भी पूरे संदर्भ के साथ। एक मान्यता यह भी रही है कि इस प्रकार लिपि पर कार्य करवाने से भाषा संरचना पर बच्चों की समझ बनेगी और वे पढ़ने से जुड़ाव भी महसूस करेंगे।

इसके लिए हमने स्थानीय समुदाय से एकत्रित की गई कहानियों में से अपने उपयोग के लिए कहानियां छांटीं। कहानियों में सिखाए जा सकने वाले शब्दों (वर्ण सिखाने हेतु) को चिन्हित किया। कुछ स्थानीय शब्दों (जिनका चित्र बन सके व पहला वर्ण बिना मात्र का हो) का चयन कर नई कहानियां भी बनाईं। काफी मशकक्त एवं फेरबदल के बाद कहानियां तैयार हुईं और बच्चों के साथ काम शुरू हुआ। इनमें प्रारम्भ की 4 कहानियां स्थानीय भाषा में रखी गईं और आगे की कहानियां हिन्दी में रखी गईं। लेकिन हमारी कोशिश रही कि हिन्दी की कहानियां भी बच्चों के परिवेश में रची-बसी हों। यह कहानी पैकेज संदर्भशाला में भाषा शिक्षण हेतु तैयार किया गया है जबकि अन्य 10 राजकीय विद्यालयों में जब भाषा पर काम करने की नीति पर बात हुई तो यह तय किया कि भाषा शिक्षण का नजरिया तो यही रहेगा लेकिन लिखित संदर्भ हेतु कहानियां आनन्द पोथी में दिए गए हिन्दी भाषा के शब्दों (वर्ण सिखाने हेतु) पर ही

नल और बकरी

एक **बकरी** रहती। बो डांग में चरबे जाती। एक दिनां बो नल पे पानी पीवे गई। **नल** में से एक **मछली** बाके मौंहड़े में सरक गई। पेट में जाके मछली कूदन लगी। सोइ **बकरी** को पेट दूखन लगो। **बकरी** इते-बिते फिरन लगी। **नल** ने कई 'तू **अनार** खाले। तेरौ पेट दूखनो बन्द हो जागौ।' **बकरी अनार** के पेड़ खैं गई। बानै **अनार** खालऔ। **मछली** लैंडीन के सिंग हीट गई।

तैयार करनी होंगी। क्योंकि बाकी के 10 विद्यालयों में हम सप्ताह में एक दिन जाकर काम करते हैं और शेष दिनों में सरकारी शिक्षकों से ही इस पद्धति से काम को आगे बढ़ाने कि अपेक्षा होती है। अतः इस तरह काम करते हुए आनन्द पोथी को काम में लेना हमारी एक सीमा रही है।

इस तरह जब आनन्द पोथी में दिए गए शब्दों (वर्ण सिखाने हेतु) पर कहानियां तैयार करने बैठे तो थोड़ी ज्यादा परेशानी हुई क्योंकि दिए गए शब्दों में फेर-बदल करना असम्भव था। लेखन भी 10 से 12 वाक्यों में बनानी थी। यह रचनात्मक कहानी लेखन पर एक बड़ी सीमा थी। फिर भी काम शुरू किया और दिसम्बर 08 के अन्त तक एक पैकेज भी तैयार कर लिया और इन लिखित संदर्भों पर काम करवाने के चरण भी तय किए गए।

लिखित संदर्भ पर काम करवाने के चरण :

- कहानी को मौखिक रूप से सुनाना
- चार्ट पर लिखे वाक्यों पर अंगुली रखते हुए पढ़कर सुनाना और कहानी पर चर्चा करना।
- चार्ट पर लिखे एक-एक शब्द पर अंगुली रखते हुए पढ़कर सुनाना और बातचीत करना।
- चार्ट पर लिखी कहानी में आए एक-एक वाक्य की अलग से पट्टिका तैयार करना और वाक्य पट्टिका को चार्ट पर लिखी कहानी के वाक्यों के साथ मिलान करवाना।
- कहानी के अनुसार वाक्य पट्टिकाओं को क्रम से जमवाना।
- शब्द चित्र कार्डों से शब्द आकृति की पहचान करवाना।
- शब्द में आने वाली प्रथम ध्वनि की पहचान करवाना और शब्द में उस ध्वनि के लिए प्रयुक्त वर्ण प्रतीक की पहचान करवाना।
- सीखे गए वर्णों से नए शब्द बनवाना एवं उनका प्रयोग संदर्भ युक्त वाक्य में करते हुए पढ़वाना।

इन कहानियों में नल, बकरी, मछली व अनार शब्दों पर बनाई कहानी पर काम करवाया गया। उससे हुए अनुभवों को मुख्य रूप से कुछ समस्याओं के संदर्भ में समझा जा सकता है कि :

- बच्चों की मातृभाषा को लिपि सिखाने के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने पर बच्चों के जुड़ाव को इसने किस प्रकार प्रभावित किया ?
- लिपि सिखाने की शुरुआत पूरे सन्दर्भ व अर्थपूर्ण माहौल में किस तरह की जा सकती है ?

- एक काल्पनिक कहानी जो वयस्क लोगों की नजर में ऊंटपंटाग हो सकती है लेकिन वह बच्चों को कल्पना करने के अवसर किस प्रकार दे सकती है ?

इस कहानी (पूर्व पेज पर बॉक्स में दी गई कहानी) को बनाते समय हमारी टीम के कुछ साथियों का कहना था कि यह कहानी ऊंटपंटाग-सी है। शायद बच्चों को इस कहानी में मजा नहीं आएगा। ऊंटपंटाग इस अर्थ में कि नल से कभी आवाज आती है क्या। 'नल में से मछली का निकल कर बकरी के मुंह में जाना' भी कुछ हजम नहीं होता। लेकिन फिर भी सभी स्तरों पर विचार विमर्श के बाद अन्य कहानियों की तरह इस पर भी काम करना तय किया गया।

इस कहानी पर अन्य साथियों की तरह मैंने भी काम किया। कहानी पर काम के दौरान इससे पूर्व यें उठाए गए संदेह दूर हो गए। यह कहानी बच्चों को बहुत पंसद आई। मैंने शुरुआत में स्थानीय भाषा की जिन तीन कहानियों पर काम किया उनमें से यह कहानी बच्चों को ज्यादा पसंद आई।

इस कहानी पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बडारा में बच्चों के साथ मैंने काम किया और मैंने अपनी डायरी में इसके अनुभवों को दर्ज भी किया। इस कहानी पर बच्चों के साथ काम करने के मेरे अनुभव इस प्रकार रहे :

मैंने आज राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बडारा में बच्चों के साथ 'नल और बकरी' कहानी पर काम किया। यह कहानी आनन्द पोथी में दिए गए शब्दों-नल, बकरी, अनार, मछली (वर्ण सिखाने हेतु)-पर हमारी टीम द्वारा बनाई गई है। आज से पहले इस कहानी को वाक्यों पर अंगुली फेरते हुए पढ़कर सुनाने का काम हो चुका था। उस दिन समूह 2 में बच्चे भी कम थे। आज पर्याप्त बच्चे थे तो शब्दों पर अंगुली रखते हुए पढ़कर सुनाने का काम कराया। मैंने शब्दों पर अंगुली रखते हुए पढ़ना शुरू किया। बच्चे भी साथ-साथ बोलने लगे। मैंने रोका और चार्ट पर ध्यान देने की बात कही। बच्चों ने फिर पूरी कहानी को ध्यान से सुना। आखिरी पंक्ति 'मछली लैंडीन के सिंग हीट गई।' को सुनकर सभी बच्चों को हंसी फूट पड़ी। बच्चों के लिए यह मजेदार बात थी। इसके बाद बब्बलेश (समूह 2 का एक बच्चा) कहानी को पढ़ने के लिए स्वयं ही खड़ा हुआ और कहानी पढ़कर सुनाने लगा। पहले 2-3 वाक्य सही पढ़कर सुनाने के बाद वह अटकने लगा। फिर भी हंसते-हंसते उसने पूरी कहानी 'पढ़ दी', मतलब सुना दी। इसके बाद कल्ली खड़ी हुई। उसने भी इसी तरह से पढ़ा,

लेकिन बब्बलेश से थोड़ा बेहतर। कहानी के वाक्य 'नल में से एक मछली बाके मौंहड़े में सरक गई।' को उसने इस तरह से पढ़ा 'नल से मछली कूंद पड़ी।' यह सुनकर सभी बच्चे हंसने लगे। फिर भी सभी बच्चे ध्यान से सुन रहे थे। चंदू ने जब कहानी को पढ़ा तो एक वाक्य 'पेट में जाके मछली कूदन लगी।' को उल्टा पढ़ा- 'बकरी मछली के पेट में कूदन लगी'। इन वाक्यों पर बच्चों के साथ मुझे भी खूब हंसी आई। हम सभी हंस-हंसकर लोट-पोट होने लगे।

मूल कहानी लगभग सभी बच्चों को याद थी। वे सभी अपनी समझ के अनुसार उसे सुना रहे थे। राजकीय शिक्षक, रतन जी, ने भी बच्चों को इस तरह कहानी पढ़कर सुनाते हुए देखा। बच्चों की कहानी सुनाने के प्रति पहल और सहजता उन्हें भी प्रभावित कर रही थी।

इस तरह कहानी पर काम करते हुए मुझे कुछ बातें महत्त्वपूर्ण लगीं :

बच्चों को स्थानीय भाषा में लिखित रूप में कहानी देने पर उनमें पढ़कर सुनाने का उत्साह दिखाई दिया। वे स्वयं पहल करते हुए खड़े होकर कहानी को चार्ट पर पढ़ने लगे। शायद इसलिए कि अपनी मातृभाषा की छोटी-सी कहानी उन्हें बेहद सहज लगी। ''अरे ये पढ़ना तो बहुत आसान है।'' ''मैं तो इसे जानता हूं।'' शायद कुछ ऐसा ही उनके दिमाग में चला होगा! स्थानीय भाषा में होने के कारण उन्हें वह कहानी याद भी जल्दी हो गई। दूसरा प्रभाव कहानी की घटनाओं व उनकी रोचकता का भी था। कहानी उन्हें अजब-सी कल्पनाएं करने के मौके दे रही थी।

इस अनुभव के बाद कह सकते हैं बच्चों के लिए पढ़ना एक अर्थपूर्ण प्रक्रिया बनने लगी थी। शुरुआत में जब बच्चे चार्ट पर लिखी कहानी पर अंगुली रखते हुए पढ़ते थे तो उनकी पढ़ने की मौखिक गति एवं अंगुली चलने की गति में अन्तर होता था। लेकिन संभवतः इससे बच्चों को यह अहसास हो रहा था कि मै जो बोल रहा हूं वैसा ही कुछ चार्ट पर लिखा हुआ है। भले ही अभी बच्चे प्रतीकों के अनुसार पठन न कर पा रहें हों फिर भी लिपि को पढ़कर अर्थ निकालने की जटिल प्रक्रिया उन्हें एकदम सहज लगने लगी थी। हम उम्मीद करते हैं कि बच्चों का वर्ण प्रतीकों का ज्ञान जैसे-जैसे बढ़ेगा वैसे-वैसे वे पढ़ने के प्रति सहजता महसूस करेंगे और चार्ट पर लिखी कहानी को पढ़ने भी लगेंगे।

इस कहानी की खास बात यह भी है कि बच्चों ने भी इसमें सुधार किया। पहले इस कहानी के वाक्य- 'नल में से एक मछली बाके मौंहड़े में सरक गई।' में 'सरक' शब्द की जगह हमने 'घुस' शब्द काम में लिया था जो कि हिन्दी का है। जब मैंने पहली बार यह कहानी सुनाई तो 'यही' शब्द काम में लिया था। उसी दिन एक बच्चे ने इस कहानी को मौखिक सुनाते हुए इस वाक्य में 'सरक' शब्द काम में लिया और भी इस तरह के सुधार कहानी में हुए हैं। साथ स्थानीय भाषा में कहानियां सुनाने व बच्चों से सुनने के दौरान मुझे स्थानीय भाषा सीखने में बहुत मदद मिली है। शायद मेरी तरह मेरे और साथियों को भी। संदर्भशाला में काम कर रहे शोध शिक्षकों का भी यह अनुभव रहा है कि कुंजी शब्दों (वर्ण सिखाने हेतु चिन्हित) की पहचान बच्चे कहानी चार्ट में कर लेते हैं। इसके अलावा अन्य शब्द भी बच्चे कहानी चार्ट में पहचान कर बता पाते हैं। 2-3 कहानियों पर काम करने के बाद चार्ट पर लिखी कहानी के साथ वाक्य पट्टिकाओं के मिलान का काम बच्चों को बहुत रुचिकर व चुनौतिपूर्ण लगता है। वे इन्तजार करते हैं कि कब शिक्षक यह काम करवाए।

आगे की दिशा व चुनौतियां :

इस छोटे से प्रयास के बाद हमें लगता है कि आदिवासी बच्चों की संस्कृति, भाषा और रोजमर्रा के जीवन के अनुरूप इन कहानियों में और सुधार की आवश्यकता है। साथ ही लिखित स्थानीय 3-4 कहानियों के बाद हिन्दी भाषा की कहानियों व कविताओं पर काम करना शायद जल्दबाजी भरा काम हो सकता है क्योंकि स्थानीय भाषा से हिन्दी में संक्रमण का चरण बेहद संजीदा है। इस चरण में बच्चों का प्रवेश उनकी स्थानीय भाषा और उनकी संस्कृति और लोक जीवन के प्रति एक सम्मानजनक दृष्टि और उनकी स्थानीय भाषा के प्रति शिक्षकों की सहजता की मांग करता है। लेकिन हिन्दी भाषा पर आने के लिए हमने बच्चों के साथ हावभाव से कविताएं करवाना शुरू किया है। लेकिन अभी भी हमारे लिए यह चुनौती बनी हुई है कि इस प्रकार लिपि सीख रहे बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि और आत्मविश्वास का भाव कैसे विकसित किया जाए तथा कुशलता के साथ हिन्दी भाषा को पढ़कर समझने की क्षमता का विकास किस प्रकार किया जाए ? ◆